# संत ज़ेवियर सीनियर सेकेंडरी विद्यालय, दिल्ली - 54

कक्षा–10 | प्रथम सत्र परीक्षा – 2014–15 | पूर्णांक–90

दिनाँक–10.9.2014 | हिन्दी | समय–3 घंटे

निर्देश :– सभी विकल्पों के उत्तर शब्दों में दीजिए।
सभी खंड (क, ख, ग, घ) अनिवार्य हैं।

## खण्ड क

I. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए। (1x5=5)

महात्मा गाँधी अपना काम अपने हाथ से करने पर बल देते थे। वह प्रत्येक आश्रमवासी से आशा करते थे कि वह अपने शरीर से संबंधित प्रत्येक कार्य, सफाई तक स्वयं करेगा। उनका कहना था कि जो श्रम नहीं करता है, वह पाप करता है और पाप का अन्न खाता है। ऋषि–मुनियों ने कहा है – बिना श्रम किए जो भोजन करता है, वह वस्तुतः चोर है। महात्मा गाँधी का समस्त जीवन–दर्शन श्रमसापेक्ष था। उनका समस्त अर्थशास्त्र यही बताता था कि प्रत्येक उपभोक्ता को उत्पादनकर्ता होना चाहिए। उनकी नीतियों की उपेक्षा करने के परिणाम हम आज भी भोग रहे हैं। न गरीबी कम होने में आती है, न बेरोज़गारी पर नियंत्रण हो पा रहा है और न अपराधों की वृद्धि हमारे वश की बात रही है। दक्षिण कोरियावासियों ने श्रमदान करके ऐसे श्रेष्ठ भवनों का निर्माण किया है, जिनसे किसी को भी ईर्ष्या हो सकती है। श्रम की अवज्ञा के परिणाम का सबसे ज्वलंत उदाहरण है हमारे देश में व्याप्त शिक्षित वर्ग की बेकारी। हमारा शिक्षित युवा वर्ग शारीरिक श्रमपरक कार्य करने से परहेज करता है, वह यह नहीं सोचता है कि शारीरिक श्रमः परिणामतः कितना सुखदायी है।

1. गाँधीजी प्रत्येक आश्रमवासी से आशा करते थे कि वह –
   i. आत्मनिर्भर बने
   ii. परिश्रमी बने
   iii. अपने शरीर से संबंधित प्रत्येक कार्य स्वयं करे
   iv. आश्रम के काम में योगदान दे
2. इस गद्यांश में चोर व्यक्ति किसे कहा गया है? –
   i. जो चोरी करता है
   ii. जो श्रम नहीं करता है
   iii. जो बिना श्रम किए भोजन करता है
   iv. जो पाप करता है
3. महात्मा गाँधी का अर्थशास्त्र हमें यह बताता है कि –
   i. प्रत्येक व्यक्ति को केवल वस्तुओं का उपभोग करना चाहिए
   ii. प्रत्येक व्यक्ति को श्रमदान करना चाहिए
   iii. प्रत्येक व्यक्ति को उत्पादनकर्ता होना चाहिए
   iv. प्रत्येक व्यक्ति को श्रम की अवज्ञा करनी चाहिए।
4. दक्षिण कोरियावासियों ने श्रमदान करके ऐसा क्या किया कि किसी को भी ईर्ष्या हो सकती है?
   i. देश से गरीबी दूर हुई
   ii. देशवासियों की बेरोज़गारी दूर हो गई
   iii. श्रेष्ठ भवनों का निर्माण किया
   iv. श्रेष्ठ कला का प्रदर्शन किया।
5. श्रम की अवज्ञा से भारत पर क्या प्रभाव पड़ा?
   i. शिक्षित वर्ग में बेकारी बढ़ी
   ii. शिक्षित वर्ग में रोज़गार बढ़े
   iii. शिक्षित वर्ग खुशहाल हो गया
   iv. इनमें से कोई नहीं

II. निम्न गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए। (1x5=5)

असफलता समझदार को भी तोड़ देती है। असफल इंसान इच्छाशक्ति, आत्मविश्वास, सही दिशा आदि सब खो बैठता है। लेकिन जो इन्हें कसकर पकड़े रहता है, वह हार को जीत में बदलने का सामर्थ्य रखता है। एक ग्रीक लेखक के अनुसार जो हम अंदर से हासिल करते हैं, वह बाहर की असलियत को बदल देता है। अंधेरे–उजाले की तरह हार–जीत का दौर भी चलता है, पर न अंधेरा चिरकालीन होता है और न उजाला। घड़ी का बराबर आगे बढ़ना हममें यह आशा भर देता है कि समय कितना भी उलटा क्यों न हो, रूका नहीं रह सकता। किसी विद्वान का कथन है कि आदमी की सफलता उसकी ऊँचाई तक चढ़ने में नहीं अपितु इसमें है कि नीचे तक गिरने के बाद वह फिर से कितना उछल पाता है। असफलता से हमें वह प्रेरणा मिलती है, जिससे हम लक्ष्य तक पहुँचने के नए रास्ते खोजते हैं। हममें कुछ करने की कामना जगती है। असफलता को नकारात्मक मानना भूल है, क्योंकि उसी में सफलता का मूल छिपा है, उसी से बाधाओं से जूझने की शक्ति मिलती है। दुर्भाग्य और हार छद्म वेश में वरदान ही होते हैं। असफलता प्रकृति की वह योजना है जिससे आदमी के दिल का कूड़ा–करकट जल जाता है और वह शुद्ध हो जाता है। तब वह उसे उड़ने को नए पंख देती है।

1. बुद्धिमान भी विफलता के क्षणों में दुखी क्यों हो जाता है?
   i. दुखों की अधिकता व भयानकता के कारण
   ii. समझदार व्यक्तियों के सुझाए मार्ग से भटकने के कारण
   iii. जूझने की इच्छाशक्ति और आत्मविश्वास डगमगाने के कारण
   iv. धनाभाव और मित्रों के विश्वासघात के कारण

Contd…..2

2. जीवन में जय–पराजय का क्रम निरंतर इसलिए चलता है, क्योंकि –
   i. दोनों की स्थिति सदा नहीं रहती ii. जीवन में कभी पराजय का अंधेरा छा जाता है
   iii. कभी विजय का आनंद जीवन को मुग्ध कर देता है iv. इसमें से कोई नहीं
3. व्यक्ति की सफलता की कसौटी है–
   i. जीवन में लक्ष्य की प्राप्ति ii. उन्नति की ऊँचाई पर चढ़ाई
   iii. मन की समस्त इच्छाओं की पूर्ति iv. गिरकर भी साहसपूर्वक उठने का सामर्थ्य
4. 'नकारात्मक' का विपरीतार्थी है –
   i. निश्चयात्मक ii. विकारात्मक iii. सकारात्मक iv. रचनात्मक
5. 'दुर्भाग्य' शब्द में उपसर्ग व मूल धातु है –
   i. दु + भाग्य ii. दुर + भाग्य iii. दूर + भाग्य iv. दुर् + भाग्य

III. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर के लिए उपयुक्त विकल्पों का चयन कीजिए – (1x5=5)

वह आता –
दो टूक कलेजे के करता, पछताता
पथ पर आता।
पेट–पीठ दोनों मिलकर हैं एक
चल रहा लकुटिया टेक,
मुट्ठी भर दाने को – भूख मिटाने को,
मुँह फटी–पुरानी झोली को फैलाता –
दो टूक कलेजे के करता, पछताता पथ पर आता।

साथ दो बच्चे भी हैं सदा हाथ फैलाए
बाएँ से वे मलते हुए पेट को चलते,
और दाहिना दया–दृष्टि पाने की ओर बढ़ाए।
भूख से सूख होंठ जब जाते
दाता–भाग्य विधाता से क्या पाते?
घूँट आँसुओं के पीकर रह जाते।
चाट रहे जूठी पत्तल वे सभी सड़क पर खड़े हुए
और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी हैं अड़े हुए।

1. प्रस्तुत काव्यांश में वर्णन किया गया है –
   i. किसान का ii. मज़दूर का iii. फेरी वालों का iv. भिखारी का
2. 'दो टूक कलेजे के करता' से कवि का आशय है –
   i. वह घायल है ii. वह अत्यंत दुखी है
   iii. वह दूसरों के हृदय को अपनी करूण पुकारों से द्रवित करते हुए आता है
   iv. उसके सीने पर जख्म हैं
3. 'दाता–भाग्य' विधाता से मिलता है –
   i. ढेर सारा धन ii. ढेर सारे कपड़े iii. ढेर सारा भोजन iv. कुछ भी नहीं
4. 'घूँट आँसुओं के पीकर रह जाते' कथन से कवि व्यक्त करना चाहता है –
   i. दुख को चुपचाप सहना ii. आँसुओं को पीकर रह जाना
   iii. नाराज़गी व्यक्त करना iv. दूसरों का दुख देना
5. 'भिक्षुक' शब्द का पर्यायवाची शब्द है –
   i. साधु ii. याचक iii. राजा iv. दाता

IV. निम्न काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए – (1x5=5)

जिसमें स्वदेश का मान भरा
आज़ादी का अभिमान भरा
जो निर्भय पथ पर बढ़ आए
जो महाप्रलय में मुस्काए
जो अंतिम दम तक रहे डटे
दे दिए प्राण, पर नहीं हटे
जो देश–राष्ट्र की बंदी पर
देकर मस्तक हो गए अमर
ये रक्त–तिलक–भारत–ललाट!
उनको मेरा पहला प्रणाम!

फिर वे जो आँधी बन भीषण
कर रहे आज दुश्मन से रण
बाणों के पवि–संधान बने
जो जवालामुख–हिमवान बने
हैं टूट रहे रिपु के गढ़ पर
बाधाओं के पर्वत चढ़कर
जो न्याय–नीति को अर्पित हैं
भारत के लिए समर्पित हैं
कीर्तित जिससे यह धरा धाम
उन वीरों को मेरा प्रणाम।

1. 'जो महाप्रलय में मुस्काए' का तात्पर्य है –
   i. जो संकटों से घिरकर खुश होते हैं ii. जो शत्रु के सामने महासंकट उपस्थित कर देते हैं
   iii. जो प्रलय देखकर प्रसन्न होते हैं iv. जो महाविनाश के बीच में भी हँसी खुशी संघर्ष करते हैं
2. 'आँधी बन भीषण' का तात्पर्य है –
   i. मुसीबत बनकर ii. अंधेरगर्दी करके iii. अंधाधुंध काम करके iv. ज़ोरदार संघर्ष करके

Contd…..3

3. प्रस्तुत काव्य पंक्तियों में रस है –
   i. भक्ति रस ii. करूण रस iii. वीर रस iv. रौद्र रस
4. 'निर्भय' शब्द में उपसर्ग व मूलधातु है –
   i. नि + भय ii. नी + भय iii. निर + भय iv. निर् + भय
5. 'मान' शब्द का समानार्थी है –
   i. अपमान ii. अभिमान iii. सम्मान iv. अहंकार

## खण्ड ख

V. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए – (3x1=3)
1. सूर्य आसमान से धीरे–धीरे उतरा और डूब गया। (सरल वाक्य में बदलिए)
2. मोहन संस्कृत पढ़ने के लिए शास्त्री जी के घर गया है। (मिश्रित वाक्य में बदलिए)
3. घर में चोर घुसने के कारण सब लोग जाग गए। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)

VI. निर्देशानुसार वाच्य बदलिए – (1x4=4)
1. जैनेंद्र द्वारा 'त्यागपत्र' उपन्यास लिखा गया। (कर्तृवाच्य में बदलिए)
2. मैं यह दृश्य देख नहीं सकता। (भाववाच्य में बदलिए)
3. हमसे इतना भार नहीं सहा जाता। (कर्तृवाच्य में बदलिए)
4. पुलिस ने अपराधी को बहुत पीटा। (कर्मवाच्य में बदलिए)

VII. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित अंशों का पद–परिचय लिखिए। (4x1=4)
1. गाड़ी लेट होने <u>के कारण</u> मैं समय पर नहीं पहुँच सकता।
2. वह <u>अचानक</u> दिखाई पड़ा।
3. धीरे–धीरे कुछ <u>लोग</u> हमारी तरफ आ गए।
4. <u>बाज़ार से</u> मोहन सामान लाया।

VIII. निम्न काव्य पंक्तियों में प्रयुक्त रस का नाम लिखिए। (4)
1. जब गीतकार मर गया, चाँद रोने आया।
   चाँदनी मचलने लगी, कफ़न बन जाने को।
2. तुम्हारी ये दंतुरित मुसकान
   मृतक में भी डाल देगी जान
   धूलि–धूसर तुम्हारे ये गात.....
   छोड़कर तालाब मेरी झोंपड़ी में खिल रहे जलजात।
3. 'अद्भुत' और 'भक्ति रस' का एक–एक उदाहरण दीजिए।

## खण्ड ग

IX. निम्नलिखित गद्यांश पर पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

फ़ादर को ज़हरबाद से नहीं मरना चाहिए था। जिसकी रगों में दूसरों के लिए मिठास भरे अमृत के अतिरिक्त और कुछ नहीं था, उसके लिए इस ज़हर का विधान क्यों हो ? यह सवाल किस ईश्वर से पूछें? प्रभु की आस्था ही जिसका अस्तित्व था। वह देह की इस यातना की परीक्षा उम्र की आखिरी देहरी पर क्यों दे? एक लम्बी, पादरी के सफेद चोगे से ढँकी आकृति सामने है – गोरा रंग, सफेद झाँई मारती भूरी दाढ़ी, नीली आँखें–बाँहें खोल गले लगाने को आतुर। इतनी ममता इतना अपनत्व इस साधु में अपने हर प्रियजन के लिए उमड़ता रहता था।

1. लेखक व पाठ का नाम बताइए। (1)
2. फ़ादर को किससे नहीं मरना चाहिए था और क्यों? (2)
3. फ़ादर की किन–किन विशेषताओं का उल्लेख इस गद्यांश में हुआ है? किन्हीं दो का उल्लेख उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। (2)

Contd…..4

**अथवा**

सोचा, आज वहाँ रूकेंगे नहीं, पान भी नहीं खाएँगे, मूर्ति की तरफ देखेंगे भी नहीं, सीधे निकल जाएँगे। ड्राइवर से कह दिया, चौराहे पर रूकना नहीं, आज बहुत काम है, पान आगे कहीं खा लेंगे। लेकिन आदत से मज़बूर आँखें चौराहा आते ही मूर्ति की तरफ उठ गईं। कुछ ऐसा देखा कि चीखे, रोको! जीप स्पीड में थी, ड्राइवर ने ज़ोर से ब्रेक मारे। रास्ता चलते लोग देखने लगे। जीप रूकते न रूकते हालदार साहब जीप से कूदकर तेज़–तेज़ कदमों से मूर्ति की तरफ लपके और उसके ठीक सामने अटेंशन में खड़े हो गए। मूर्ति की आँखों पर सरकंडे से बना छोटा सा चश्मा रखा था, जैसा बच्चे बना देते हैं। हालदार साहब भावुक हो गए। इतनी सी बात पर उनकी आँखें भर आईं।

1. पाठ और लेखक का नाम लिखिए। (1)
2. हालदार साहब ने ड्राइवर को ऐसा क्यों कहा कि आज चौराहे पर गाड़ी न रोकना? (1½)
3. हालदार साहब भावुक क्यों हो गए? (1½)
4. प्रस्तुत गद्यांश की दो शैलीगत विशेषताएँ लिखिए। (1)

X. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 50–60 शब्दों में दीजिए। (2x5=10)

1. 'नेताजी का चश्मा' पाठ क्या संदेश देता है?
2. बालगोबिन भगत के जीवन से जुड़ी कौन–सी बातों ने आपको प्रभावित किया और क्यों?
3. 'फ़ादर बुल्के ने संयासी की छवि से अलग एक नई छवि प्रस्तुत की है।' इस कथन पर प्रकाश डालिए।
4. बिना विचार, घटना, पात्रों के भी क्या कहानी लिखी जा सकती है। यशपाल के इस विचार से आप कहाँ तक सहमत हैं? स्पष्ट कीजिए।
5. बाल गोबिन भगत पाठ के आधार पर बताएँ कि आम व्यक्ति किस प्रकार साधु का जीवन जी सकता है?

XI. प्रस्तुत काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए। (1x5=5)

उसकी स्मृति पाथेय बनी है थके पथिक की पंथा की।
सीवन को उधेड़ कर देखोगे क्यों मेरी कंथा की?
छोटे से जीवन की कैसे बड़ी कथाएँ आज कहूँ?
क्या यह अच्छा नहीं कि औरों की सुनता मैं मौन रहूँ?
सुनकर क्या तुम भला करोगे मेरी भोली आत्मकथा?
अभी समय भी नहीं, थकी सोई है मेरी मौन व्यथा।

1. कवि और कविता का नाम लिखिए।
2. 'उसकी स्मृति पाथेय बनी है' – आशय स्पष्ट कीजिए।
3. 'छोटे से जीवन की कैसे बड़ी कथाएँ आज कहूँ' अर्थ स्पष्ट कीजिए।
4. 'थकी सोई है मेरी मौन व्यथा' अर्थ स्पष्ट कीजिए।
5. काव्य सौंदर्य की कोई दो विशेषताएँ उदाहरण सहित लिखिए।

**अथवा**

डार द्रुम पलना बिछौना नव पल्लव के,
सुमन झिंगूला सोहै तन छबि भारी दै।
पवन झूलावै, केकी–कीर बतरावै 'देव'
कोकिल हलावै हुलसावै कर तारी दै।।
पूरित पराग सो उतारो करै राई नोन,
कंजकली नायिका लतान सिर सारी दै।।
मदन महीप जू को बालक बसंत ताहि,
प्रातहि जगावत गुलाब चटकारी दै।।

1. इस कविता में किस ऋतु का वर्णन है और उसकी कल्पना किस रूप में की गई है?
2. कवि और कविता का नाम लिखिए।
3. प्रस्तुत पद किस काल व किस छंद में लिखा गया है?
4. कवि ने किन–किन पक्षियों को किस–किस रूप में दिखाया है?
5. काव्य सौंदर्य की कोई दो शैलीगत विशेषताएँ उदाहरण सहित लिखिए।

XII. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 50–60 शब्दों में दीजिए। (2x5=10)

1. गोपियों को यह क्यों लगता है कि कृष्ण ने राजनीति पढ़ ली है?
2. 'जै जग–मंदिर–दीपक सुंदर' किसे कहा गया है और क्यों?
3. 'उत्साह' कविता में कवि किसे गरजने के लिए कह रहे हैं और क्यों?

Contd…..5

4. शिशु की मुस्कान व स्पर्श की क्या–क्या विशेषताएँ या प्रभाव कवि ने बताए हैं?
5. 'फसल' कविता में कवि ने किन पाँच तत्वों के महत्त्व को प्रकाशित किया है, कैसे?

XIII. नाक किसका प्रतीक है? 'जॉर्ज पंचम की नाक' पाठ में कौन–कौन अपनी नाक को लेकर चिंतित हैं, स्पष्ट कीजिए तथा यह भी बताएँ कि ये पाठ किस तरह वर्तमान सामाजिक व्यवस्था पर व्यंग्य करता है? (5)

**अथवा**

'माता का अंचल' पाठ के आधार पर भोलानाथ के किन्हीं दो खेलों का संक्षेप में वर्णन कीजिए। साथ ही यह भी बताइये कि – 1. गाँवों के प्रति युवाओं में आकर्षण कैसे जगाया जा सकता है? 2. गाँव हमारे जीवन में क्या उपयोगिता रखते हैं?

## खण्ड घ

XIV. तमाम् जागरूकता होने के बावजूद लोग सार्वजनिक स्थानों पर गंदगी फैलाते हैं, आप एक ज़िम्मेदार नागरिक होने के नाते इस बात से बेहद दुःखी हैं। इस चिंता को व्यक्त करते हुए तथा आवश्यक सुझाव देते हुए किसी दैनिक समाचार–पत्र के संपादक को पत्र लिखिए। (5)

**अथवा**

आपने किसानों की स्थिति के बारे में बहुत कुछ देखा, सुना और पढ़ा है, अब आप कृषि के क्षेत्र में उच्च अध्ययन करना चाहते हैं लेकिन आपके पिताजी आपके निर्णय से सहमत नहीं हैं, किसानों की स्थिति से अवगत कराते हुए अपने पिताजी को पत्र लिखिए तथा ये बताएँ कि आप किसानों की स्थिति बेहतर कैसे कर सकेंगे।

XV. दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर एक विषय पर लगभग 250 शब्दों में एक निबंध लिखिए। (10)

1. असुरक्षित दिल्ली –
   – भारत की राजधानी
   – असुरक्षा की भावना
   – महिलाओं की स्थिति
   – उपाय
2. समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता –
   – समय का मूल्य
   – समय का सदुपयोग और सफलता (उदाहरण भी दीजिए)
   – समय का सही उपयोग कैसे करें
3. राष्ट्र के प्रति कर्तव्य –
   – राष्ट्रप्रेम का अर्थ
   – इतिहास से प्रेरणा
   – जीवित रहते हुए देशसेवा
   – देशहित सर्वोपरि

XVI. निम्नलिखित गद्यांश का सार (40–50 शब्दों में) एवं शीर्षक लिखिए। (4+1=5)

मधुरभाषण मित्रों की संख्या में अभिवृद्धि करता है, किन्तु मित्र बनाना हो तो पहले उस व्यक्ति–विशेष को परख लो, विश्वासपात्र बनाने में जल्दी मत करो। अनेक व्यक्तियों से मेल रखो, किन्तु परामर्श के लिए सर्वश्रेष्ठ को चुनो। कुछ तथाकथित मित्र प्रेम–भाव तो अवश्य प्रदर्शित करते हैं, किंतु मुसीबत पड़ने पर किनारा कर लेते हैं। सच्चा मित्र जीवन–औषधि है, संकटकाल में सुदृढ़ कवच है। जिसने ऐसा मित्र पा लिया, समझो अनमोल ख़ज़ाना पा लिया। सच्चा मित्र एक शिक्षक की भाँति होता है। जिस प्रकार शिक्षक अपने छात्र को सन्मार्ग की ओर अग्रसर करता है उसी प्रकार सच्चा मित्र अपने मित्र को पाप के गर्त में गिरने से बचाता है। मित्र के उपदेश का जितना प्रभाव हृदय पर पड़ता है, उतना और किसी का नहीं।

*****